A Pratibha Spandan Journal

SWAR SINDHU
(National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music)
ISSN 2320–7175 (O) | Volume 13, Issue 02, July-December, 2025

कलाओं का केंद्र : बृहदीश्वर मंदिर

Dr. Khileshwari Patel
Assistant Professor, Department of Dance, Faculty of Music and Performing Arts, Banaras Hindu University, Varanasi

OPEN ACCESS

सारांश

भारतीय परंपराओं एवं कलाओं के संरक्षण में मंदिर महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। विशेष रूप से दक्षिण भारत के मंदिर, न केवल स्थापत्य के प्रतीक है, बल्कि ये भारत की समृद्ध परंपरा एवं संस्कृति को जीवंत रखने का भी कार्य करती है। मंदिरों को अक्सर पूजा-स्थल के रूप में देखा जाता है, लेकिन कई सभ्यताओं की सांस्कृतिक एवं कलात्मक विरासत के संरक्षण में भी इनका महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त होता है। मंदिर के वास्तुशिल्प, रचनाकार की कलात्मक शक्ति और सौन्दर्यशास्त्र में उनकी गहरी सोच एवं समझ को प्रदर्शित करती है। इससे यह भी स्पष्ट होता है कि भारत, हजारों वर्षों पूर्व से ही कलाओं में दक्ष एवं विकसित देश रहा है। हमारे पूर्वजों ने यह प्रयास किया है कि मंदिरों के माध्यम से यह कलात्मक विरासत संरक्षित रहे और समय के साथ नष्ट न हो, बल्कि भविष्य की पीढ़ियों के लिए सुलभ बनी रहे। तंजावुर के राज-राजा चोल शासक ने तंजावुर में दो ऐसे मंदिरों का निर्माण करवाया, जो केवल एक धार्मिक स्थल नही थे, अपितु आर्थिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक केंद्र भी थे। राज-राजा चोल I द्वारा निर्मित प्रसिद्ध शिव मंदिर 'राज-राजेश्वरम् (985-1014) वास्तुकला का अनूठा उदाहरण है। इसके साथ-साथ इस मंदिर में नृत्यकला, चित्रकला एवं शिलालेख के अनुपम उदाहरण भी प्राप्त होते हैं, जो वर्तमान समय के शोधार्थियों एवं विद्यार्थियों के लिए पथप्रदर्शक एवं अध्ययन-अध्यापन का केंद्र है।

शोध प्रविधि एवं उद्देश्य: इस शोधपत्र लेखन हेतु विवरणात्मक एवं विश्लेषात्मक शोध-प्रविधि का प्रयोग किया गया है। शोध पत्र लेखन हेतु प्राथमिक स्त्रोत (मंदिर के अवलोकन) के साथ-साथ विविध संदर्भ ग्रंथों, पुस्तकों एवं संबंधित शोध आलेखों का अध्ययन किया गया है। बृहदीश्वर मंदिर विरासत में प्राप्त ऐसा मंदिर है, जिसका उदाहरण वास्तुकला के लिए दिया जाता है। परंतु प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य मंदिर के वास्तुकला के साथ-साथ अन्य कलाओं जैसे - शिल्पकला, चित्रकला, नृत्यकला, मूर्तिकला एवं उत्कीर्ण शिलालेख की ओर ध्यान आकर्षित करना है। यह एक ऐसा मंदिर है जहाँ सभी कलाओं का अद्भुत संगम प्राप्त होता है, जो भारतीय कलाओं की प्राचीनता एवं समृद्ध परंपराओं के लिए आदर्श स्थापित करता है। एक कलाकार की दृष्टिकोण से, इन कलाओं की महत्ता एवं इनकी प्राचीनता को उजागर करने का प्रयास इस शोधपत्र में निहित है।

***मुख्य बिन्दु** : तंजावुर, बृहदीश्वर मंदिर, नृत्यकला, करण, चोल साम्राज्य, मूर्तिकला, ललितकला।*

प्रस्तावना

दक्षिण भारत का कलाओं से गहरा संबंध रहा है और वहाँ के मंदिर इन कलाओं के संरक्षण का प्रमुख स्थान। इन कलाओं को प्रश्रय देने में दक्षिण भारत के राजाओं का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है, जिनकी इन कलाओं में विशेष रुचि थी और जिन्होंने इन कलाओं को सहेजने व संरक्षित करने में अपनी शक्ति एवं संपत्ति का उचित प्रयोग भी किया। दक्षिण भारत के अनेक ऐसे मंदिर है, जिन्हें अपनी बनावट व वास्तुकला के लिए जाना जाता है, इन्हीं में से एक है - तंजावुर का बृहदीश्वर मंदिर। जिसे राज-राजेश्वर के नाम से भी जाना जाता है। यूनेस्को द्वारा 1987 में इस मंदिर को विश्वधरोहर घोषित किया गया। "इसका निर्माण राज-राजा प्रथम के संरक्षण में 18वीं (1002 ई०) और 25वीं (1009 ई०) के बीच किया गया था। यह राजा के राजनीतिक, सामाजिक व आर्थिक वर्चस्व को दर्शाता है। राजा एवं उनके परिवार ने इस मंदिर के निर्माण और रख-रखाव के लिए बड़े पैमाने पर दान किया था और निश्चित रूप से यह उनके लिए एक गौरव स्मारक था।"[i] यह मंदिर केवल चोल साम्राज्य के शक्ति को ही नही दर्शाता, अपितु यह वास्तुकला, शिल्पकला, चित्रकला एवं शिलालेखों के ऐतिहासिकता का प्रमाण भी है। अधिकतर इस मंदिर की वास्तुकला ने लोगों का ध्यान आकर्षित किया है। परंतु विरासत में प्राप्त इस अद्भुत और अप्रतिम मंदिर के दीवारों पर अन्य कलाओं का जीवंत संगम देखा जा सकता है। इस मंदिर के बनावट व वास्तुकला के रहस्य को जानने एवं समझने के लिए इस दिशा में कई शोधकार्य हुए हैं और अन्य कलाओं से संबंधित रहस्यपूर्ण तथ्यों का अनावृत्त होना शेष है।

स्वसंकलित चित्र संख्या 01

वास्तुकला

मंदिर की ओर दृष्टिपात होते ही सर्वप्रथम यदि कहीं ध्यान आकर्षित होता है, तो वह है - मंदिर की संरचना। "यह मंदिर 500 फुट लंबा और 150 फुट चौड़ा है, मध्य में विमानम, अर्द्धमंडप, महामंडप और उनके सामने बड़ा नंदी मंडप, सभी एक पंक्ति में बनाए गए हैं, और सामने पूर्व में एक गोपुर प्रवेश द्वार है। मंदिर की पूरी आयोजना का मुख्य भाग है, पश्चिम में बना भव्य विमान जो गर्भगृह से 200 फुट ऊपर है और आस-पास की चीजों में सवार्तिप्रमुख।''ii "यह श्री विमान भी ग्रेनाइट पत्थर से बना है। इस श्री विमानम को दक्षिण भारतीय द्रविड़ वास्तुकला में पद्मगर्भगृह के नाम से जाना जाता है। इसकी ऊंचाई 216 फीट और इसका वजन लगभग 80 टन है।"iii वास्तव मे यह विचारणीय है की उस समयकाल मे (हजारों वर्ष पूर्व) जब हमारे पास इतने संसाधन नही थे तब इतनी ऊंचाई पर 80 टन का गोपुर बनाना किस प्रकार संभव रहा होगा। यह तभी संभव है जब प्रशिक्षित और कौशल कारीगर हों और जिनमें अथाह धैर्य और समर्पण हो। मंदिर की गुम्बद की एक ओर विशेषता है कि इसकी परछाई कभी भी धरती पर नही पड़ती, जो वास्तुकला का एक अनूठा उदाहरण है।

"यह भारत के सबसे बड़े मंदिरों में से एक है। इसे विश्व का सबसे ऊंचा विमान माना जाता है और साथ ही साथ पूरे विश्वभर का पहला ऐसा मंदिर है, जो पूर्ण रूप से पत्थर का बना हुआ है।"iv ऐसा उल्लेख प्राप्त होता है कि मंदिर निर्माण के लिए पत्थर के बड़े खण्डों को 50 किमी० की दूर से इस स्थल पर लाया गया था। मंदिर के गर्भगृह के ठीक समक्ष नंदी की विशाल प्रतिमा है, जो केवल एक चट्टान को तराशकर बनाया गया है और जिसका वजन लगभग 25 टन है। इसी तरह मंदिर का प्रत्येक क्षेत्र वास्तु की दृष्टि से सराहनीय है। प्रवेश द्वार से लेकर मंदिर के हर एक दीवार और स्तम्भ में वास्तुशिल्प का उत्कृष्ट उदाहरण देखने को मिलता है।

शिलालेख

बृहदीश्वर मंदिर की दीवारों पर महत्त्वपूर्ण शिलालेखों का वर्णन है, जो चोल राजराजा एवं अन्य शासकों के द्वारा अंकित करवाया गया है। इसमें राजा की महत्ता, उनके मंदिर निर्माण की योजना और चोल साम्राज्य की महत्त्वपूर्ण जानकारी दर्ज की गई है। यह शिलालेख भारतीय इतिहास और चोल साम्राज्य के अध्ययन में महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है, वर्तमान समय में ये शिलालेख विभिन्न कालों, राजवंशों और ऐतिहासिक घटनाओं के बारे में जानकारी प्रदान करते हैं।

स्वसंकलित चित्र संख्या 02

"मंदिर के मुख्य गर्भगृह एवं बाहरी दीवारों पर राजराजा प्रथम के कुल 64 शिलालेख, 29 उनके पुत्र राजेन्द्र I (1022-1044) और बाद के चोल सम्राटों राजेन्द्र II (1052-1064), कुलोतुंग I (1071-1122) और विक्रम चोल (1118-1135) के एक-एक शिलालेख प्राप्त होते हैं। इसके बाद के समय में पांडियन राजा के तीन शिलालेख, विजयनगर सम्राट के दो और अच्युतप्पा नायक व मल्लपा नायक के एक-एक और दस मराठी शिलालेख प्राप्त होते हैं जिसका श्रेय राजा सरफोजी द्वितीय को दिया जाता है।"v "शिलालेखों से यह पता चलता है कि केरल क्षेत्र में आक्रमण के बाद युद्ध से भारी मात्रा में सोना, मोती और जवाहरात प्राप्त हुए, जिसे बृहदीश्वर मंदिर के निर्माण और रख-रखाव के लिए दान कर दिया गया।"vi विभिन्न शिलालेखों में से एक शिलालेख में इस बात का उल्लेख भी प्राप्त होता है कि "महाराजा ने 1801-02 में मंदिर का शुद्धिकरण और पुनरुद्धार किया। मंदिर के मरम्मत के साथ-साथ कई तीर्थ स्थलों का निर्माण किया, नए मंडप का निर्माण किया गया, मंदिर के रसोई का निर्माण किया गया, दीवारों का जीर्णोद्धार, प्रांगण के फर्श आदि महत्वपूर्ण कार्य उनके द्वारा करवाए गए।"vii मंदिरों से प्राप्त ये शिलालेख, ऐतिहासिक जानकारी तो प्रदान करते ही हैं। साथ ही साथ भाषा और लिपि के विकास, कानूनी एवं प्रशासनिक नीतियों को समझने में भी मदद करता है।

नृत्यकला एवं मूर्तिकला

दक्षिण भारत के मंदिरों में नक्काशी और सुंदर कारीगरी मिलना आम बात है, परंतु इस मंदिर में भरत मुनि द्वारा रचित नाट्यशास्त्र में वर्णित 'करण' एवं नृत्य संबंधित अन्य मूर्तियाँ प्राप्त होती हैं। जिसकी वजह से अन्य मंदिरों की तुलना में यह मंदिर अधिक महत्त्वपूर्ण एवं सराहनीय है। " बृहदीश्वर मंदिर के मुख्य गर्भगृह के ऊपर गोपुर के प्रथम तल (मंजिल) के प्रदक्षिणा पथ की भीतरी दीवार पर ये करण उत्कीर्ण है। मंदिर की दीवारों पर केवल 81 करण ही बनाए गए थे। अन्य 27 करणों की मूर्ति बनाने का स्थान खाली रखा गया था, जो आज भी रहस्य का विषय है। बाद में चिदंबरम और

SWAR SINDHU
(National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music)
ISSN 2320–7175 (O) | Volume 13, Issue 02, July-December, 2025

सारंगपाणि मंदिर के आधार पर अन्य करणों को बनाया गया।"viii मंदिर के प्रांगण में एक अलग स्थान पर भगवान नटराज की मूर्ति स्थापित है, जो नृत्य के देवता है। मंदिरों में बनी यह मूर्तियाँ भारत की संस्कृति का प्रतिनिधित्व करती है और शास्त्रीय नृत्य की भाव-भंगिमाओं एवं नृत्य मुद्राओं की परिचायक होने के साथ-साथ उनके निर्माण समय के सामाजिक मूल्यों और सौंदर्यात्मक गुणों का भी बखान करती है। नृत्य की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि और कलात्मक अभिव्यक्ति की समृद्धि को दर्शाती है। मंदिर के धार्मिक अनुष्ठानों में नृत्य की क्या भूमिका रही होगी, यह समझने एवं जानने का भी एक माध्यम है। "सबसे महत्त्वपूर्ण और ललितकला की दृष्टिकोण से दिलचस्प बात यह है कि इन शिलालेखों में यह उल्लेख प्राप्त होता है कि राजराजा के शासनकाल में लगभग 400 नर्तकियों को नियुक्त किया गया था। जिनका प्रमुख कार्य पूजा की दैनिक विधि-विधानों में एवं विभिन्न पर्वों पर ईश्वर के समक्ष नृत्य करना था। इसके अतिरिक्त इनकी दिनचर्या में पूजा के लिए फूल इकट्ठा करना, परिसर की सफाई करना जैसे अन्य कार्य भी सम्मलित थे। इन सभी नर्तकियों को विभिन्न गाँवों और कस्बों से लाया गया था। नर्तकियों को दिए जाने वाले पारिश्रमिक और नर्तकियों की मृत्यु की नियुक्ति पर उत्तराधिकारी के संबंध में अपनाए जाने वाले विभिन्न नियमों का उल्लेख भी इन शिलालेखों में किया गया है।"ix इससे यह स्पष्ट होता है कि नृत्य एवं संगीत, मंदिर के पूजा-विधि के अभिन्न अंग थे और कलाओं को उच्च स्थान प्राप्त था।

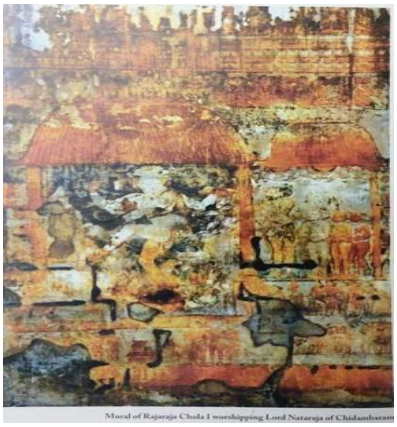

श्रुति मैगज़ीन चित्र संख्या 03

भगवान शिव को समर्पित इस चोल मंदिर में, पत्थर एवं धातुओं से बनी हुई नटराज की उत्कृष्ट संरचनाएं प्राप्त होती है, उनमें से कुछ को आज भी देखा जा सकता है। शिलालेख से यह ज्ञात होता है कि राज-राजा I द्वारा धातु की 66 प्रतिमाएं दान दी गई थी। मंदिर की मूर्तियों में निहित लावण्य और सौन्दर्य मूर्तिकार की उस कला में दक्षता को बयां करता है। ये नृत्य की मूर्तियाँ नृत्यकला एवं मूर्तिकला के अन्तर्संबंध को भी प्रदर्शित करती है। नृत्य में प्रदर्शित की जाने वाली भंगिमाओं को एक शिल्पकार, पत्थरों में उकेरकर सजीवता प्रदान करता है। और किस प्रकार विभिन्न नृत्य मुद्राओं एवं चेहरे के भावों की हुबहु अनुकृति कर उसमें प्राण डाल देता है।

चित्रकला

अन्य कलाओं के भांति, बड़ी ही खूबसूरती से मंदिर की दीवारों पर चित्रकला को भी सँजोया गया है। इन पेंटिंग (चित्रकारियों) को देखकर चित्रकार के ज्ञान का एवं कला के प्रति उनके समर्पण का अनुभव होता है। इन चित्रों को देखकर भगवान शिव के प्रति राजा की निःस्वार्थ भक्ति का भी आभास होता है। भारतीय चित्रकारी के इतिहास में तंजाऊर का अपना एक अलग स्थान है। "तंजाऊर के मंदिर में बने चित्र, चिरस्थायी सुंदरता का अद्भुत आदर्श है। हिन्दू ऋषि मुनियों द्वारा वैदिक चिन्हों को बनाने हेतु विभिन्न जड़ी-बूटियों का प्रयोग किया गया है। प्रतीक/चिन्हों को बनाने के लिए प्राकृतिक तत्वों जैसे - फूल, हरे पत्ते, हल्दी, उपचारित मिट्टी, नीम, नमक व अन्य जड़ी-बूटियों के घोल का प्रयोग किया गया है। आयुर्वेद के औषधीय ज्ञान का उपयोग करके ऐसे वैदिक चिन्हों की अवधि (स्थायित्व) सुनिश्चित की गई थी।"x

हजारों वर्ष बाद भी दीवारों पर इन भित्तिचित्रों का होना इस बात का प्रमाण है कि उस समयकाल में चित्रकला के क्षेत्र में आधुनिक एवं नवीन प्रयोग किए जाते थे। वर्तमान में जहाँ हर जगह कृत्रिम चीजों का प्रयोग हो रहा है, वहीं इस तरह के मंदिरों में हजारों वर्षों पूर्व प्राकृतिक रंगों का प्रयोग होना प्रकृति प्रेम, स्वास्थ्य के प्रति सजगता, पर्यावरणीय स्थिरता को दर्शाता है और भावी पीढ़ी के लिए यह एक प्रेरणा का स्रोत भी है। मंदिर की दीवारों में बने चित्रों में विभिन्न आध्यात्मिक कथाओं का चित्रांकन किया गया है। कैलाश में शांत मुद्रा में बैठे हुए शिव का अद्भुत दृश्य है। उत्तरी दीवार पर त्रिपुरांतक के रूप भगवान शिव और पश्चिम दिशा की दीवार पर एक मंडप में नृत्य करते हुए भगवान नटराज की भव्य पेंटिंग है, जो स्पष्ट रूप से चिदंबरम नटराज मंदिर से मिलती जुलती है। नटराज की प्रतिमा के समक्ष, कुछ बैठी हुए महिलाओं का सुंदर चित्र है।

अन्नमलाई विश्वविद्यालय के एस० के० गोविन्दस्वामी ने इस क्षेत्र में शोधकार्य किया और मंदिर में बने पेंटिंग पर प्रकाश डाला। उनके अनुसार "मंदिर के प्रदक्षिणा पथ की दीवारों पर बने भित्तिचित्रों पर 900 वर्ष से अधिक समय तक एक आवरण चढ़ गया था और 17वीं शताब्दी के बाद जब नायक शासकों के समय मे इसे छीला गया, तो नीचे की पेंटिंग सामने आयी। विद्वान के द्वारा यह भी पुष्टि की गई है कि इनमें से केवल कुछ पेंटिंग ही मूलरूप में दिखाई पड़ रहे हैं और अन्य अभी भी आवरण के पीछे छुपी हुई है।"xi

निष्कर्ष

इस मंदिर की अलौकिकता एवं भव्यता का शब्दों में वर्णन करना संभव नही है। इस मंदिर के माध्यम से आज ललित कलाओं के प्रति लोगों को एक नई दृष्टिकोण प्राप्त होती है। यह भी प्रमाणित होता है कि उस समय ललित कलाओं को कितना प्रोत्साहित किया गया और राजा के संरक्षण में ये कलाएं कितनी पल्लवित एवं विकसित हुई। उस दौर में नृत्य एवं संगीत को समाज में उच्च स्थान प्राप्त था और इन कलाकारों को उच्च श्रेणी का सम्मान दिया जाता था। भारत देश में योग्य व निपुण कलाकारों की कमी नही थी। प्राचीन समय से ही देश में असाधारण एवं श्रेष्ठ कलावंत प्राप्य थे और हमें यही बहुमूल्य परंपरा आज भी प्रवाहित होती हुई प्राप्त हो रही है। राज-राजा चोल प्रथम द्वारा प्राप्त यह एक अद्भुत देन है, जो वास्तुकला के साथ-साथ अन्य कलाओं के सर्वोत्तम तत्वों से परिपूर्ण है। कलाओं का ऐसा केंद्र है, जो न केवल विरासत को संरक्षित करता रहा है, बल्कि देश को विश्वव्यापी पहचान भी दिला रहा है।

मंदिर के निर्माण में अत्यंत सूक्ष्म से सूक्ष्म बिन्दुओं पर ध्यान केंद्रित किया गया है, जिसे देखकर यह स्पष्ट होता है कि मंदिर के निर्माण का उद्देश्य पूर्णतया धार्मिक और भक्तिपूर्ण था। राजा की समृद्धि तथा धन संपदा का दिखावा करना नही था। चोल मंदिरों की प्रमुख विशेषताएं यही है कि इन मंदिरों में उत्कृष्ट कार्यान्वयन, प्रभावी तकनीक एवं उत्कृष्ट निर्माण सामग्री का प्रयोग किया गया है। हजारों वर्षों से स्थित यह मंदिर आज भी धर्म, संस्कृति, शिक्षा एवं कलाओं का सागर है, जिसमें से अनेक बहुमूल्य रत्नों को तराशना और अनुसंधान करना शेष है।

स्वसंकलित चित्र संख्या 04

संदर्भ ग्रंथ

i Rajavelu,S,Athiyaman,N,Selvakumar,V,8th september2017,Amaravati(felicitation volume for Professor P.Shanmugam), Chennai, Felicitation committee,pg-229.

ii शास्त्री, डॉ० के० ए० नीलकंठ, जनवरी 2014, दक्षिण भारत का इतिहास, पटना, बिहार हिन्दी ग्रंथ अकादेमी।

iii Diksha, P.S., The magnificance of Brihdeeshwar Temple Tanjavur, International Journal of Multidiscipilinary Research and Growth Evaluation, vol. 3, issue 3, pg. 635.

iv Muthuramlingam,S,Saravarakumar,M,2023,Heritage of Tamil,Chennai,yes Dee publishing pvt.ltd,pg-77-78.

v Sivaramamurti,C,2007,The Great Chola Temples(Thanjavur Gangaikondacholapuram Darasuram), New Dehi, The director general Archeological survey of India,pg-26.

vi Rajavelu,S,Athiyaman,N,Selvakumar,V,8th september2017,Amaravati(felicitation volume for Professor P.Shanmugam), Chennai, Felicitation committee,pg-229.

vii Sivaramamurti,C,2007,The Great Chola Temples(Thanjavur Gangaikondacholapuram Darasuram), New Dehi, The director general Archeological survey of India,pg-26.

viii Sruti-India's Premier Magazine for the Performing Arts, July 2011, Issue-322, The Big temple, Chennai, pg-21.

ix Sruti-India's Premier Magazine for the Performing Arts, July 2011, Issue-322, The Big temple, Chennai, pg-21.

x .Dokras, Uday, Mysteries solved: Secrets of the Tanjavur (Tanjore) Brihadeeswarar temple built by Raja Raja Chola,www.academia.edu,pg-13

Link: http://www.academia.edu/43951688/mysteriessolved

xi Krishnamurthi, S.R.,1966, A Study on the Cultural Development in the Chola Period, Annamalai University, pg-51.